

सीबीएसई कक्षा - 12  
हिन्दी (ऐच्छिक) सेट-1  
2014 (बाहरी दिल्ली)

निर्देश:

- कृपया जाँच कर लें कि इस प्रश्न-पत्र में 15 प्रश्न हैं।
- कृपया प्रश्न का उत्तर लिखना शुरू करने से पहले, प्रश्न का क्रमांक अवश्य लिखें।

खण्ड-‘क’

1. निम्नलिखित गद्यांश को ध्यान से पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए:

जिन लेखों और विश्लेषणों को हम पढ़ते हैं वे राजनीतिक तकाजों से लाभ-हानि का हिसाब लगाते हुए लिखे जाते हैं, इसलिए उनमें पक्षधरता भी होती है और पक्षधरता के अनुरूप अपर पक्ष के लिए व्यर्थता भी। इसे भजनमंडली के बीच का भजन कह सकते हैं। सांप्रदायिकता, अर्थात् अपने संप्रदाय की हित-चिंता अच्छी बात है। यह अपनी व्यक्तिगत क्षुद्रता से आगे बढ़ने वाला पहला कदम है, इसके बिना मानव-मात्र की हित-चिंता, जो अभी तक मात्र एक खयाल ही बना रह गया है, की ओर कदम नहीं बढ़ाए जा सकते। पहले कदम की कसौटी यह है कि वह दूसरे कदम के लिए रुकावट तो नहीं बन जाता। बृहतर सरोकारों से लघुतर सरोकारों का अनमेल पड़ना उन्हें संकीर्ण ही नहीं बनाता, अन्य हितों से टकराव की स्थिति में लाकर एक ऐसी पंगुता पैदा करता है जिसमें हमारी अपनी बाढ़ भी रुकती है और दूसरों की बाढ़ को रोकने में भी हम एक भूमिका पेश करने लगते हैं। धर्मों, संप्रदायों और यहाँ तक कि विचारधाराओं तक की सीमाएँ यहीं से पैदा होती हैं, जिनका आरंभ तो मानवतावादी तकाजों से होता है और अमल में वे मानवद्रोही ही नहीं हो जाते बल्कि उस सीमित समाज का भी अहित करते हैं जिसके हित की चिंता को सर्वोपरि मानकर ये चलते हैं।

सामुदायिक हितों का टकराव वर्चस्वी हितों से होना अवश्यभावी है। अवसर की कमी और अस्तित्व की रक्षा के चलते दूसरे वंचित या अभावग्रस्त समुदायों से भी टकराव और प्रतिस्पर्धा की स्थिति पैदा होती है। बाहरी एकरूपता के नीचे सभी समाजों में भीतरी दायरे में कई तरह के असंतोष बने रहते हैं और ये पहले से रहे हैं। सांप्रदायिकता ऐसी कि संप्रदायों के भीतर भी संप्रदाय। भारतीय समाज का आर्थिक ताना-बाना ऐसा रहा है कि इसने सामाजिक अलगाव को विस्फोटक नहीं होने दिया और इसके चलते ही अभिजातीय सांप्रदायिक संगठनों को पहले कभी जन-समर्थन नहीं मिला।

(क) गद्यांश के लिए एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए। (1)

(ख) जिन लेखों को हम पढ़ते हैं वे कैसे लिखे जाते हैं? इसका क्या परिणाम होता है? (2)

(ग) किस अर्थ में सांप्रदायिकता को अच्छी बात कहा गया है? (2)

(घ) हमारे सरोकारों की रुकावट और परस्पर टकराव के क्या परिणाम होते हैं? (2)

---

(ड) 'वंचित या अभावग्रस्त' समुदाय से क्या तात्पर्य है? इनसे टकराव की स्थिति कब पैदा होती है? (2)

(च) भारत में अभिजातीय सांप्रदायिक संगठनों को जन-समर्थन क्यों नहीं मिला? (2)

(छ) संप्रदायों के भीतर भी संप्रदाय' - इसे स्वयं लेखक ने कैसे समझाया है? (2)

(ज) 'सांप्रदायिकता' शब्द से एक उपसर्ग और एक प्रत्यय अलग कीजिए। (1)

(झ) (i) 'तकाज़ा, दायरा' तथा (ii) 'असंतोष, समर्थन' शब्द उत्पत्ति (स्रोत) की दृष्टि से किन भेदों के अंतर्गत आते हैं? (1)

उत्तर- (क) साम्प्रदायिकता

(ख)

- लाभ-हानि के हिसाब से।
- राजनीति से प्रभावित होकर।
- पक्षधरता को ताकत मिलती है।

(ग)

- व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठना।
- समूह की चिंता करना।
- मानव हित में व्यावहारिक कदम बढ़ाना।

(घ)

- स्वयं का विकास रुकता है।
- दूसरे के विकास को भी रोकते हैं।
- धर्म, सम्प्रदाय तथा विचारधारा में भेद उत्पन्न होता है।

(ङ)

- जिनका अस्तित्व संकट में हो एवं अवसर की कमी रहे।
  - गरीब।
  - अभाव में रहने वाला।
  - मौके कम होने से।
  - असंतोष के कारण।
  - असमानता के कारण।
-

---

(च)

- भारतीय समाज में प्रत्येक वर्ग एक-दूसरे पर आधारित।
- एक-दूसरे से भावनात्मक जुड़ाव।

(छ)

- बाहर से एक दिखने वाले समाज में आन्तरिक स्तर पर असंतोष।
- प्रत्येक व्यक्ति अपने से छोटा खोज लेता है।
- यह अंतर आर्थिक, सामाजिक तथा धार्मिक स्तर पर।

(ज) -उपसर्ग - सम्/प्र

-प्रत्यय - इक/ता

(झ) (i) आगत

(ii) तत्सम

2. निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए: (1×5=5)

गुलाब का फूल है हमारा पढ़ा-लिखा

मैंने उसे काफ़ी उलट-पुलट कर देखा है

मुझे तो वह ऐसा ही दिखा

सबसे बड़ा सबूत उसके गुलाब होने का यह है

कि वह गाँव में जाकर बसने के लिए तैयार नहीं है

गाँव में उसकी प्रदर्शनी कौन कराएगा

वहाँ वह अपनी शोभा की प्रशंसा किससे कराएगा

वह फूलने के बाद किसी फ़सल में थोड़े ही बदल जाता है

मूरख किसान को फूलने के बाद

फ़सल देने वाला ही तो भाता है,

गाँव में इसलिए ठीक हैं अलसी और सरसों के फूल।

---

---

बीच-बीच में यह प्रस्ताव कि गुलाब गाँव में चिकित्सा करे या पढ़ाए

पेश करने में कोई हर्ज नहीं है

मगर साफ़ समझ लेना चाहिए कि गुलाब का यह फ़र्ज नहीं है कि

गाँव जाकर खिले, अलसी और सरसों वगैरा से मिले

ढँक जाए वहाँ की धूल से

और वक्तन बवक्तन अपनी प्रदर्शनी न कराए

आमीन, गुलाब पर ऐसा वक्त कभी न आए।

(क) गुलाब तथा अलसी-सरसों के फूल किनके प्रतीक हैं?

(ख) संप्रान्त वर्ग शहरी युवकों को गाँव क्यों नहीं जाने देता?

(ग) वे लोग गाँव में किसका बसना उचित मानते हैं और क्यों?

(घ) काव्यांश में निहित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।

(ङ) भाव स्पष्ट कीजिए:

आमीन, गुलाब पर ऐसा वक्त कभी न आए।

उत्तर- (क) प्रतीक:

गुलाब - पढ़े-लिखे शहरी

अलसी-सरसों - ग्रामीण लोग

(ख)

- गाँव में प्रदर्शन की सुविधाएँ नहीं।
- दिखावे में विश्वास नहीं।

(ग)

- जो फूलने के बाद फसल दे, उपयोगी हों।
  - जीवन के लिए आवश्यक।
-

---

(घ) शहरी सम्भ्रांत गाँव जाकर बसना नहीं चाहते, सेवा करना नहीं चाहते।

(ङ) प्रभु करे, गुलाब को गाँव के कष्ट झेलने न पड़े।

### अथवा

जाड़े की एक सुबह अलसाई-

पा गई है कुहरे को मोटी रजाई।

घाटी के ऊपर झुक

फैला-सा अंबर ज्यों

सजल-सरल शब्दों से

बेमन दुलार रहा

दे रहा हो थपकी-सी

आ रही हो झपकी-सी

घाटी को।

या फिर खुद घाटी ने मानव का दर्द जान

मानव को अपने ही अंतर का भाग मान

लोरी के कपसीले बादल बिखराए हों

कुहरे के झीने-से

कबूतर के डैने-से पुल ये बनाए हों

जिससे कि मानव भी पा सके सिद्धि-स्वर्ग।

(क) जाड़े की सुबह को 'अलसाई' क्यों कहा गया है?

(ख) घाटी को झपकी क्यों आ रही है?

(ग) घाटी ने पुल कैसे और किसलिए बनाए हैं?

---

---

(घ) मानव के प्रति घाटी की क्या दृष्टि है?

(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए:

लोरी के कपसीले बादल बिखराए हों

कुहरे के झीने-से

कबूतर के डैने-से पुल ये बनाए हों

उत्तर- (क) 'अलसाई' यानी सुस्ती से भरी। जाड़े के मौसम में स्वाभाविक रूप से आलस्य आ जाता है। इसलिए जाड़े की सुबह को 'अलसाई' कहा गया है।

(ख) अंबर द्वारा दुलार व थपकी देने से।

(ग)

- बादल/कुहरे से कबूतर के डैनों जैसे पुल बनाना।
- मानव के ददे को दूर कर सुख प्रदान करना।

(घ) घाटी ने मानव को अपना हिस्सा मान दुख को दूर करना।

(ङ) कवि ने शीतल बादलों की लोरी बनाकर, हलके कोहरे को बिखेरकर, कबूतर के डैनों से सुंदर पुल का निर्माण किया है।

### खण्ड-‘ख’

3. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर लगभग 400 शब्दों में निबन्ध लिखिए: (10)

(क) उत्तराखण्ड की त्रासदी और उसका सबक

(ख) लोकतंत्र में मताधिकार का महत्व

(ग) आतंकवाद की समस्या

(घ) प्रगति की जड़ों को जकड़े हैं अंधविश्वास

उत्तर- किसी एक विषय पर निबंध अपेक्षित:

- भूमिका (1)
  - विषय-वस्तु एवं प्रतिपादन (6)  
(तीन बिंदुओं का प्रतिपादन)
  - उपसंहार (1)
  - भाषा और प्रस्तुति (2)
-

---

4. प्राचीन और आदर्श संस्कृति का दावा करने वाले भारतीय समाज में कन्या-भ्रूण की हत्या की समस्या पर अपने विचार व्यक्त करते हुए किसी पत्र के संपादक को पत्र लिखिए और समाधान के लिए एक उपाय भी सुझाइए। (5)

उत्तर- पत्र-लेखन:

- आरम्भ और अंत की औपचारिकताएँ (2)
- प्रश्नानुसार विषय-वस्तु (2)
- भाषा विषयानुरूप (1)

अथवा

‘सबका सहारा’ नामक संस्था को आपदाग्रस्त क्षेत्रों में जाकर राहतकार्य में हाथ बँटाने वाले कुछ स्वयंसेवकों की आवश्यकता है। अपनी रुचि, स्वास्थ्य, कार्यकुशलता और शैक्षिक योग्यताओं का विवरण देते हुए संस्था के जनसंपर्क-अधिकारी को पत्र लिखिए।

उत्तर- पत्र-लेखन:

- आरम्भ और अंत की औपचारिकताएँ (2)
- प्रश्नानुसार विषय-वस्तु (2)
- भाषा विषयानुरूप (1)

5. ईद-मिलन के दृश्यों का उल्लेख करते हुए ‘ईद का महत्व’ विषय पर एक फीचर का आलेख लिखिए। (5)

उत्तर- फीचर-लेखन:

- आकर्षक प्रस्तुति (2)
- विषय वस्तु (2)
- भाषायी शुद्धता (1)

अथवा

‘पुरुषप्रधान समाज में नारी-सुरक्षा की समस्या’ विषय पर एक आलेख लिखिए।

उत्तर- आलेख-लेखन:

- विचारों की स्पष्टता एवं तथ्यात्मकता (2)
- विषय वस्तु (2)
- भाषायी शुद्धता (1)

6. निम्नलिखित का संक्षेप में उत्तर दीजिए: (5)

---

---

(क) संपादकीय किसे कहा जाता है?

(ख) पीत पत्रकारिता का आशय स्पष्ट कीजिए।

(ग) स्टिंग ऑपरेशन क्या है? यह क्यों किया जाता है?

(घ) इलैक्ट्रॉनिक माध्यम की लोकप्रियता के दो कारण लिखिए।

(ङ) आपके विचार से संचार-माध्यमों में कैसी भाषा का प्रयोग किया जाना चाहिए?

उत्तर- (क) विभिन्न घटनाओं और मुद्दों पर समाचार पत्र की राय/सम्पादक द्वारा लिखा लेख।

(ख) किसी के चरित्रहनन के उद्देश्य से सनसनीखेज समाचारों को प्रकाशित करना।

(ग) गुप्त रूप से रिकार्डिंग कर ऐसे तथ्यों और सूचनाओं को सामने लाना जिन्हें दबाने या छिपाने का प्रयास किया जा रहा हो।

(घ)

- घटनाओं की सूचना तत्काल।
  - शिक्षित-अशिक्षित सभी के लिए उपयोगी।
  - त्वरित सुधार /अपडेशन की सुविधा।
- (किन्हीं दो का उल्लेख अपेक्षित)

(ङ)

- आसान और बोलचाल की भाषा हो।
  - प्रयुक्त वाक्य छोटे, सरल एवं स्पष्ट हों।
  - गूढ़ शब्दों एवं संक्षिप्ताक्षरों का प्रयोग नहीं हो।
- (किन्हीं दो का उल्लेख अपेक्षित)

खण्ड-‘ग’

7. निम्नलिखित को सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (8)

सियरि अग्नि बिहनि हिय जारा।

सुलगि सुलगि दगधै भै छारा।।

यह दुख दगध न जानै कंतू।

जोबन जरम करै भसमंतू।।

---



---

पिय सौं कहेहु संदेसड़ा ऐ भँवरा ऐ काग।

सो धनि बिरहें जरि मुई, तेहिक धुआँ हम लाग।।

उत्तर- सियरि अगिनि .....हम लाग।।

कवि - मलिक मुहम्मद जायसी

कविता – बारहमासा

प्रसंग - अगहन मास में विरह संतप्त नागमती की मनोदशा का मार्मिक चित्रण।

व्याख्या बिंदु -

- सर्दी से बचने के लिए जगह-जगह आग जली है लेकिन यह सर्दी आग की भाँति विरहणियों के हृदय को जला रही है।
- यह दुख प्रिय नहीं जानता कि इस आग में नागमती का यौवन भस्म हो रहा है।
- वह भौंरे और कौवे के माध्यम से पति को संदेश भेजती है कि तुम्हारी प्रिया तुम्हारे विरह की आग में जलकर मर गई और हम उसी धुएँ से काले हो गए।
- काले रंग के कारण ही भौंरे और कौवे को संदेशवाहक बनाया।

विशेष-

- अवधी भाषा का सरस प्रयोग।
- दोहा-चौपाई छंद।
- उत्प्रेक्षा, अनुप्रास अलंकार। 'सियरी-अगिनि' में विरोधाभास अलंकार।
- पक्षियों के माध्यम से संदेश भेजने की काव्य-रूढ़ि का पालन।

अथवा

आदमी दशाश्वमेध पर जाता है

और पाता है घाट का आखिरी पत्थर

कुछ और मुलायम हो गया है

सीढ़ियों पर बैठे बंदरों की आँखों में

एक अजीब-सी नमी है

और एक अजीब-सी चमक से भर उठा है

---

---

भिखारियों के कटोरों का निचाट खालीपन।

उत्तर- आदमी दशाश्वमेध ..... निचाट खालीपन।

कवि - केदारनाथ सिंह

कविता - बनारस

प्रसंग - बसंत का आगमन और दशाश्वमेध घाट पर उसका प्रभाव।

व्याख्या बिंदु-

- श्रद्धालुओं के मन में भी भावों का अंकुरण-वसंत का प्रभाव।
- श्रद्धालु संवेदनशीलता होकर आस्था से भर जाते हैं और उनकी जड़ता टूट जाती है।
- घाट का आखिरी पत्थर मुलायम होने से कवि का आशय है कि बसंत का प्रभाव कठोर हृदयों पर भी एवं समाज के अंतिम व्यक्ति तक पड़ता है।
- भिखारी भी अपने खाली कटोरों में धन पाकर आनंदित हैं, उनकी आँखों में चमक है।

विशेष-

- खड़ी बोली।
- मुक्त छंद, अतुकांत।
- विवरणात्मक शैली का प्रयोग।
- चित्रात्मकता।

8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (3+3=6)

(क) 'दीप अकेला' के प्रतीकार्थ को स्पष्ट कर बताइए कि उसे स्नेहभरा और मदमाता क्यों कहा गया है।

(ख) 'गीत गाने दो मुझे' कविता में चित्रित सामाजिक स्थितियों का वर्णन करते हुए स्पष्ट कीजिए कि ऐसे में कविता करने का क्या उद्देश्य है।

(ग) 'घनानंद' के 'हियौ हितपत्र' की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए बताइए कि पत्र के साथ प्रेमपात्र ने क्या किया और क्यों।

उत्तर- (क)

- 'दीप-अकेला' से आशय - व्यष्टि अर्थात् व्यक्ति मात्र।
  - जो सर्वगुण संपन्न है परंतु समाज से कटा हुआ है।
  - स्नेहपूर्ण - क्योंकि अंधेरा दूर करने के लिए प्रकाश देता है।
-

- गर्वभरा क्योंकि उसमें अँधेरे से लड़ने की शक्ति है।
- मदमाता - उसमें व्यक्तिगत सत्ता का अहंकार है।

(ख)

- सामाजिक स्थितियाँ - समाज में नकारात्मक सोच वालों की प्रभुता स्थापित, संघर्षरत व्यक्तियों पर निरंतर प्रहार, जो कुछ मूल्यवान है उसे लूटा जा रहा, मानवता का अंत दिखाई दे रहा है।
- कविता करने का उद्देश्य - मनुष्य में समाप्त जिजीविषा की लौ को फिर से जगाने के लिए, संसार से निराशा हटाकर आशा और नवजीवन का संचार करने के लिए।

(ग)

- 'हियौ हितपत्र' में पूर्णप्रेम के महान मंत्र का अमृत सामाविष्ट है। उसमें नायिका के ही सुंदर चरित्र की विशेषताओं को विचार करके लिखा गया है। यह हृदय को सुख देने वाला पत्र है जिसमें किसी अन्य कथा का उल्लेख नहीं।
- प्रेमपात्र (प्रिया) ने लिखने वाले के प्रेम को जानते हुए भी अनजान बनकर पत्र के टुकड़े कर दिए और इसे पढ़ा तक नहीं।

## 9. निम्नलिखित में से किन्हीं दो काव्यांशों का काव्य-सौन्दर्य स्पष्ट कीजिए: (6)

(क) कातर दिठि करि, चौदिस हेरि-हेरि नयन गए जल-धारा।

तोहर बिरह दिन छन-छन तनुछिन चौदसि-चाँद-समान॥

(ख) इस पथ पर, मेरे कार्य सकल

हों भ्रष्ट शीत के-से शतदल !

कन्ये, गत कर्मों का अर्पण

कर, करता मैं तेरा तर्पण।

(ग) हेम कुंभ ले उषा सवेरे - भरती दुलकाती सुख मेरे।

मदिर ऊँघते रहते जब - जगकर रजनी-भर तारा॥

उत्तर- (क) कातर दिठि करि.....चौदसि चाँद समान॥

भाव सौंदर्य-

श्रीकृष्ण के मथुरा चले जाने पर वियोगिनी राधा की शारीरिक एवं मानसिक अवस्था का मार्मिक चित्रण। राधा के नेत्रों से निरंतर आँसुओं का बहना, शरीर का चंद्रमा की कलाओं की तरह लगातार क्षीण होते जाना एवं कातर दृष्टि से श्रीकृष्ण को खोजते रहना जैसे वर्णन राधा की विरह मनोदशा को भी उजागर करते हैं।

शिल्प सौंदर्य-

- सरल, सहज, माधुर्यपूर्ण मैथिली भाषा।
- छंद पद।
- सम्पूर्ण पद में अनुप्रास अलंकार। 'हेरि-हेरि', 'छन-छन' में पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार, 'चौदसि-चाँद समान' में उपमा अलंकार।
- विप्रलम्भ शृंगार।
- उत्तम बिंब विधान।
- बसंत का उद्दीपनकारी वर्णन  
(किन्हीं तीन बिंदुओं का उल्लेख अपेक्षित)

(ख) इस पथ पर.....तेरा तर्पण।

भाव सौंदर्य-

दिवंगत पुत्री सरोज के प्रति कवि के पितृ-हृदय की वेदना की मार्मिक अभिव्यक्ति। उनके किए गए कार्य खिले कमल जैसे, जिसे जीवन के कड़वे यथार्थ रूपी पाले ने नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। अनथक प्रयासों के बावजूद कवि द्वारा पिता के रूप में असफल होने का दुख इन पंक्तियों में प्रकट हुआ है।

शिल्प सौंदर्य-

- भाषा - तत्सम शब्दावली युक्त खड़ी बोली।
- मुक्त छंद, तुकांत शैली।
- 'हों भ्रष्ट शीत.....शतदल' में उपमा अलंकार।
- बिंबात्मकता।
- करुण भाव।

(ग) हेम कुंभ ले.....रजनी-भर तारा।।

भाव सौंदर्य-

भारत के प्राकृतिक सौंदर्य का मनोहारी चित्रण। प्रातःकालीन सूर्य अर्थात् उषा आकाश सरोवर से सुखों को स्वर्ण-कलश में भरकर उन्हें हम भारतवासियों के ऊपर उड़ेल देती है, जब रातभर जगने के बाद तारे मादक नींद में ऊँघ रहे होते हैं। यहाँ उषा एक पनिहारिन है जो धरती पर सुखों का घड़ा उड़ेल देती है।

शिल्प सौंदर्य -

- तत्समप्रधान शब्दावली युक्त खड़ी बोली।
- माधुर्य गुण।
- मुक्त छंद।

- 'हेम-कुंभ' में रूपक अलंकार।
- 'ऊँघते.....तारा' में मानवीकरण अलंकार।
- प्राकृतिक बिंब-योजना।

## 10. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए: (6)

लड़की ने आज गुलाबी परिधान नहीं पहना था पर सफ़ेद साड़ी में लाज से गुलाबी होते हुए उसने मंसा देवी पर एक और चुनरी चढ़ाने का संकल्प लेते हुए सोचा, “मनोकामना की गाँठ भी अद्भुत अनूठी है, इधर बाँधो उधर लग जाती है।”

उत्तर- लड़की ने आज.....लग जाती है।

लेखिका - ममता कालिया

पाठ - दूसरा देवदास

प्रसंग - लड़की को इतनी शीघ्र मनोकामना पूर्ति

पर आश्चर्य मिश्रित सुख का अनुभव।

व्याख्या बिंदु-

- पारो ने मनसा देवी मंदिर में संभव से मिलने की मनोकामना लेकर धागे की गाँठ बाँधी थी।
- संभव को तत्क्षण अपने सामने देखकर प्रसन्न।
- अप्रत्याशित रूप से देख पाने के कारण लज्जा का भाव।
- मंदिर में माँगी मनोकामना का स्मरण आश्चर्य मिश्रित सुख के साथ।

विशेष-

- खड़ी बोली गद्य।
- भाषा सरल और सहज।
- चित्रात्मक वर्णन।

अथवा

जिन्हें इस देश की धरती से प्यार है, इस धरती पर बसने वालों से स्नेह है, जो साहित्य की युगांतरकारी भूमिका समझते हैं, वे आगे बढ़ रहे हैं। उनका साहित्य जनता का रोष और असंतोष प्रकट करता है, उन्हें आत्मविश्वास और दृढ़ता देता है, उनकी रुचि जनता की रुचि से मेल खाती है और कवि उसे बताता है कि इस विश्व को किस दिशा में परिवर्तित करना है।

उत्तर- जिन्हें इस देश.....परिवर्तित करना है।

---

लेखक - रामविलास शर्मा

पाठ - यथास्मै रोचते विश्वम्

प्रसंग - लेखक ने साहित्यकार के कर्तव्यों की ओर संकेत करते हुए उसकी परिवर्तनकामी भूमिका को रेखांकित किया है।

व्याख्या बिंदु-

- देश एवं देशवासियों से जुड़े साहित्यकार भविष्योन्मुखी होते हैं।
- वे साहित्य की युगांतकारी भूमिका समझते हैं।
- उनका साहित्य जनता का रोष और असंतोष प्रकट कर जन भावनाओं की अभिव्यक्ति करता है।
- ऐसे साहित्य से जनता को आत्म-विश्वास एवं दृढ़ता मिलती है।
- ऐसा साहित्य ही जनता का सही मार्गदर्शन करता है।

विशेष-

- खड़ी बोली गद्य।
- तत्सम प्रधान शब्दावली।
- विचारप्रधान तार्किक शैली।

**11. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (4+4=8)**

(क) कुटज का जीवन किन मानवीय मूल्यों की सीख देता है और कैसे? पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

(ख) संवदिया की क्या विशेषताएँ मानी जाती हैं? फिर भी हरगोविन बड़ी बहुरिया का संवाद क्यों नहीं सुना पाया?

(ग) 'कच्चा चिढ़ा' के आधार पर इलाहाबाद के संग्रहालय को व्रजमोहन व्यास के योगदान पर प्रकाश डालिए।

उत्तर- (क)

- जीवन की विषम परिस्थितियों में भी न घबराना, शान से जीना - कठोर पाषाण को भेद कर, पाताल की छाती चीर कर जीवन रस प्राप्त करना।
- स्वाभिमान के साथ जीना - किसी की चापलूसी नहीं करना।
- समष्टि बुद्धि के साथ स्वयं को सबके लिए न्योछावर करना - दलित द्राक्षा की तरह।
- जो मिल जाए उसे शान से, अपराजित होकर सोल्लास ग्रहण करना।

(ख) संवदिया की विशेषताएँ -

- ग्रामीण समाज का अभिन्न अंग, संवाद पहुँचाने का कार्य।
-

- प्राप्त संवाद को अक्षरशः सुर-स्वर में याद कर वैसे ही सुनाना।
- संवाद को गोपनीय रखना।

संवाद न सुना पाने के कारण-

- ग्रामीण सामाजिक मर्यादा की भावना - बहू गाँव की लक्ष्मी होती है, वही चली जाएगी तो क्या बचेगा।
- सामाजिक निंदा का भय - लोग उसके गाँव का नाम लेकर थूकेंगे।
- हरगोबिन का संवेदनशील हृदय बड़ी बहुरिया की मर्यादा हानि को स्वीकार न कर सका।

(ग)

- इलाहाबाद का विशाल और प्रसिद्ध संग्रहालय व्यास जी की देन।
- दुर्लभ मूर्तियों, सिक्कों, मनकों, पुस्तकों एवं चित्रों का व्यक्तिगत प्रयासों द्वारा संग्रह।
- पुरातत्व सामग्री को बिना विशेष धन व्यय किए एकत्र किया।
- लोकहित कार्य में व्यक्तिगत ईमानदारी एवं लोक निंदा के भय को महत्व नहीं दिया।
- संग्रहालय के लिए विशाल भवन निर्माण कराया।

**12. भीष्म साहनी अथवा असगर वजाहत के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी भाषा-शैली की दो प्रमुख विशेषताएँ सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। (6)**

उत्तर- भीष्म साहनी

जन्म एवं जीवन परिचय -

- रावलपिंडी में जन्म। गवर्नमेंट कॉलेज, लाहौर से अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. और पंजाब विश्वविद्यालय से पीएच.डी.।
- अध्यापन कार्य अंबाला कॉलेज, खालसा कॉलेज (अमृतसर), जाकिर हुसैन कॉलेज (दिल्ली विश्वविद्यालय)।
- 'विदेशी भाषा प्रकाशन गृह' मास्को में भाषा के अनुवादक रहे।
- 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' से सम्मानित किया गया। हिन्दी अकादमी ने उन्हें 'शलाका सम्मान' से सम्मानित किया।

रचनाएँ- 'भाग्य रेखा', 'भटकती राख', 'पहला पाठ', 'वाङ्मय पटरियाँ', 'शोभा यात्रा', 'निशाचर', 'डायन', 'पाली' (कहानी संग्रह), 'हानूश', 'माधवी', 'मुआवजे', 'कबिरा खड़ा बाजार में' (नाटक), 'गुलेल का खेल' (बालोपयोगी कहानियाँ) आदि। नई कहानियों के कुशल सम्पादक।

साहित्यिक विशेषताएँ-

- भाषा-शैली में पंजाबी भाषा की सोंधी-सोंधी महक महसूस की जा सकती है।
- भाषा में उर्दू शब्दों का प्रयोग विषय को आत्मीयता प्रदान करता है। छोटे-छोटे वाक्यों का सफल प्रयोग करके विषय को रोचक एवं प्रभावी बना देते हैं।

- 
- संवादों का सटीक प्रयोग वर्णन में ताजगी ला देता है।  
(कोई एक उदाहरण सहित)

### अथवा

असगर वजाहत

जन्म एवं जीवन परिचय -

जन्म फतेहपुर, उत्तर प्रदेश में।

- प्रारंभिक शिक्षा फतेहपुर में हुई। उन्होंने एम.ए. (हिन्दी) और पीएच.डी., अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय से की।
- सन् 1955-56 से लेखन कार्य प्रारंभ किया।
- लघु कथा, नाटक, उपन्यास, कहानी के साथ-साथ फिल्मों और धारावाहिकों के लिए पटकथा लेखन का काम भी किया।

रचनाएँ- 'दिल्ली पहुँचना है', 'स्विमिंग पुल और सब कहाँ कुछ', 'आधी बानी', 'मैं हिंदू हूँ' (कहानी संग्रह), 'फिरंगी लौट आए', 'इन्ना की आवाज', 'वीरगति', 'समिधा', 'जिस लाहौर नई देख्या तथा उनकी' (नाटक), 'सबसे सस्ता गोश्त' (नुक्कड़ नाटकों का संग्रह), 'रात में जागने वाले', 'पहर दोपहर' तथा 'सात आसमान', 'कैसी आगि लगाई' (प्रमुख उपन्यास) आदि।

साहित्यिक विशेषताएँ-

- भाषा में गाम्भीर्य, सबल भावाभिव्यक्ति एवं व्यंग्यात्मकता है।
- मुहावरों तथा तद्भव शब्दों के प्रयोग से सादगी आ गई है।
- उनकी लघुकथाओं में प्रतीकात्मकता है। प्रतीकों के द्वारा उन्होंने व्यवस्था, मजदूरों के शोषण, किसानों की दुर्दशा आदि पर व्यंग्य किया है। पर्याप्त मात्रा में तत्सम व उर्दू शब्दों का प्रयोग भी मिलता है।  
(कोई एक उदाहरण)

### अथवा

तुलसीदास अथवा विष्णु खरे के जीवन और रचनाओं का संक्षिप्त परिचय देते हुए उनकी दो प्रमुख काव्यगत विशेषताओं को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- तुलसीदास

जन्म एवं जीवन परिचय -

- जन्म उत्तर प्रदेश के बाँदा जिले के राजापुर गाँव में हुआ। कुछ विद्वान उनका जन्म स्थान सोरों को भी मानते हैं। पिता आत्माराम दुबे और माता हुलसी थीं। विवाह विदुषी रत्नावली से हुआ। तुलसीदास का गृहत्याग करना प्रसिद्ध है। अपना सारा जीवन प्रभु-भक्ति एवं लोक-जागरण को समर्पित कर दिया।
-



---

रचनाएँ- 'रामचरितमानस', 'विनयपत्रिका', 'गीतावली', 'कृष्ण गीतावली', 'दोहावली', 'बरवै रामायण', 'जानकी-मंगल', 'पार्वती-मंगल' आदि।

साहित्यिक विशेषताएँ-

- तुलसीदास लोक मंगल की साधना के कवि हैं। उनकी धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक दृष्टि अत्यंत व्यापक है।
- अवधी के कवि हैं। छंद-विधान में वे सिद्धहस्त हैं।
- 'मानस' में दोहा-चौपाई का विधान है तो कवितावली में कवित्त-सवैया शैली है।
- सत्य तो यह है कि उनकी रचनाओं में भाव, विचार, काव्यरूप, छंद-विवेचन और भाषा की विविधता मिलती है।  
(कोई एक उदाहरण)

### अथवा

विष्णु खरे

जन्म एवं जीवन परिचय-

- जन्म छिंदवाड़ा।
- क्रिश्चियन कॉलेज से अंग्रेजी-साहित्य में एम.ए.।
- इंदौर समाचार - उप सम्पादक।
- दिल्ली तथा मध्य प्रदेश के महाविद्यालयों में अध्यापन, लघु पत्रिका 'व्यास' का संपादन, साहित्य अकादमी में उप सचिव, नवभारत टाइम्स में कार्यकारी सम्पादक।
- नवभारत टाइम्स, जयपुर के संपादक, जवाहरलाल नेहरू स्मारक संग्रहालय तथा पुस्तकालय-दो वर्ष वरिष्ठ अध्यक्षता, स्वतंत्र लेखन, अनुवादक।

रचनाएँ -

टी.एस. इलियट का अनुवाद- 'मेरु प्रदेश और अन्य कविताएँ', कविता संग्रह - 'एक गैर-रुमानी समय में', 'खुद अपनी आँख से', 'सबकी आवाज के पर्दे में', 'पिछला बाकी', समीक्षा पुस्तक- 'आलोचना की पहली किताब'।

काव्यगत विशेषताएँ-

- अभ्यस्त जड़ताओं और अमानवीय स्थितियों के विरुद्ध सशक्त नैतिक स्वर की अभिव्यक्ति।
- भारतीय संस्कृति, नैतिक मूल्यों के उल्लेख द्वारा पौराणिक संदर्भों को प्रतिपादित करना।
- मानव कल्याण की भावना।  
(कोई एक उदाहरण)

### खण्ड- 'घ'

---

---

13. निम्नलिखित में से किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए: (2+2=4)

(क) सूरदास अपनी हानि को जगधर से क्यों छिपाना चाहता था?

(ख) 'आरोहण' कहानी में महीप अपने बारे में पूछे गए प्रश्नों को टाल क्यों देता था?

(ग) "पग-पग नीर वाला मालवा सूखा हो गया" - कैसे? 'अपना मालवा ....." पाठ के आधार पर उत्तर दीजिए।

उत्तर- (क) क्योंकि-

- वह सोचता है कि भिखारियों के लिए धन संचय पाप एवं अपमान है।
- अंधे भिखारी के लिए दरिद्रता इतनी लज्जा की बात नहीं, जितना धन।

(ख)

- वह रूप के बड़े भाई का बेटा है।
- वह अपना परिचय रूप से छिपाना चाहता है।
- वह अपने बारे में कुछ भी बताने से कतराता है।

(ग)

- मालवा में अब वैसा पानी नहीं गिरता जैसा गिरा करता था।
- पानी न गिरने का मुख्य कारण - वायुमंडल में कार्बन डाइऑक्साइड की अधिकता।
- नदी, नाली, तालाबों में गाद का भरना।
- जंगलों का तेजी से नष्ट होना।

14. "अंधापन ही क्या थोड़ी विपत्ति थी कि नित ही एक-न-एक चपत पड़ती रहती है।"

(i) दृष्टि-विकलांगता की कठिनाइयों का उल्लेख कीजिए। 2

(ii) क्या-क्या उपाय किए जाएँ कि दृष्टि-विकलांगता विपत्ति' न प्रतीत हो? (3)

उत्तर- (i) दृष्टि-विकलांगता की कठिनाइयाँ-

- आत्म-निर्भरता का अभाव।
- पर-निर्भरता की आत्मग्लानि।
- कार्य कुशलता का अभाव।
- समय के एहसास का अभाव।

(ii) दृष्टि-विकलांगता 'विपत्ति' न प्रतीत हो-

---

- कार्य करने के योग्य बनाया जाए।
  - ब्रेल लिपि का प्रयोग करना सिखाया जाए।
  - विकलांगता विपत्ति को मद्दे नज़र रखते हुए परिसर का निर्माण।
  - संगीत-शिक्षण का प्रावधान किया जाए।
  - उन्हें सहायक देने का प्रावधान।
  - पारिवारिक सहयोग।
- (किन्हीं तीन की चर्चा)

**15. “भूपसिंह ऐसा पर्वत-पुत्र है जो पग-पग पर आपदाओं से टक्कर लेता है, पर हार नहीं मानता।” उक्त कथन के आलोक में भूपसिंह के चरित्र की विशेषताएँ सोदाहरण समझाइए। (6)**

**उत्तर-** भूपसिंह के चरित्र की विशेषताएँ-

- पुरुषार्थी, बेहद धैर्यवान।
- आत्मानुशासित और आत्मबल युक्त।
- परिश्रमी और सीधा-सादा व्यक्ति।
- तमाम पीड़ाओं को अपने अंदर समेटे हुए।
- अत्यंत स्वाभिमानी।
- पहाड़ों पर चढ़ने की कला में अत्यंत कुशल।

**अथवा**

“गाँव में ज्ञात-अज्ञात वनस्पतियों, जल के विविध रूपों और मिट्टी के अनेक वर्णों - आकारों का ऐसा समस्त वातावरण था जो सजीव था।” ‘बिस्कोहर की माटी’ पाठ के आधार पर सोदाहरण पुष्टि कीजिए।

**उत्तर-** वनस्पतियों, जल के विविध रूप एवं मिट्टी के प्रकारों से एक सजीव वातावरण की रचना होती है-

**अनेक प्रकार की ज्ञात - अज्ञात वनस्पतियाँ -**

- कमल, कोइयाँ, हरसिंगार, तोरई, लौकी, भिंडी, भटकटैया, इमली, अमरूद, कदंब, बैंगन, कोहड़ा (सीताफल), शरीफा, आम के बौर, कटहल, बेल, अरहर, उड़द, चना, मसूर आदि। इनका जीवन की गतिविधियों में अनिवार्य स्थान।
- पोखर (तालाब) का जल, वर्षा ऋतु का संगीतमय जल, वर्षा का आगमन, उसकी विभिन्न ध्वनियाँ एक अपूर्व अनुभव पैदा करती हैं।
- खेत की मेड़, खेत की मिट्टी, तालाब की मिट्टी, गाँव में कीचड़ आदि भी बिस्कोहर के अनुभव की रचना करते हैं।